विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र, दिनांक- 25/08/2023
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या -

प्रस्तावना कपटनाटकस्य। कदलिका कामकरिणः। वध्यशाला साधुभावस्य। राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य।

अर्थ -

(प्रस्तावना कपटनाटकस्य) यह लक्ष्मी छलरूपी नाटक की प्रस्तावना (आमुख, भूमिका) है।

"Strength does not come from physical capacity. It comes from an indomitable will." —Mahatma Gandhi


IND CamScanner App

(कदलिका कामकरिणः) काम रूपी हाथी के लिए केले का वृक्ष है। (वध्यशाला साधुभावस्य) शुभ भावना की वध्यभूमि है। धर्म रूपी चन्द्र मण्डल का ग्रास करने वाली राहु की जीभ है। (राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य)।

टिप्पणी—

प्रस्तुत प्रसंग में लक्ष्मी को दल रूपी नाटक की प्रस्तावना कहा गया है। भाव यह है कि जैसे प्रस्तावना से नाटक का प्रारम्भ होता है, उसी प्रकार दल-प्रपंच का श्रीगणेश लक्ष्मी से ही होता है। यहाँ रूपट में नाटक का आरोप लक्ष्मी में प्रस्तावना के आरोप का निमित्त है, अतः 'परम्परित रूपक' अलंकार है।

जिस प्रकार गजराज कदलीवन में स्वैर-विहार करता है, उसी प्रकार कामदेव लक्ष्मी की छाया में ही स्वच्छन्द विहार का आनन्द लूटता है। स्वैर विहार के साम्य से यहाँ काम में हाथी का आरोप किया गया है तथा यह आरोप लक्ष्मी में केले के वन के आरोप का कारण है, अतः 'परम्परित रूपक' अलंकार है। जिस प्रकार वध्यशाला में प्राणियों की हत्या कर दी जाती है, उसी प्रकार लक्ष्मी भी मनुष्य के सौजन्य का गला घोंट देती है। अर्थात् लक्ष्मी के आते ही शुभ भावना का विलोप हो जाता है। अतः लक्ष्मी में वध्यशाला का आरोप उपयुक्त ही है। 'रूपक'। जिस प्रकार राहु की जिह्वा से चन्द्रमण्डल ग्रसा जाता है उसी तरह लक्ष्मी धर्म को निगल जाती है। यहाँ कवि ने उज्ज्वल कान्ति के साधर्म्य से धर्म में चन्द्रमण्डल का आरोप किया है जो कि लक्ष्मी में राहु जिह्वा के आरोप का कारण बना, अतः 'परम्परित

"You have to take the calculated risk, to earn something." - Dhirubhai Ambani


IND CamScanner App

Date ___/___/_____ Page No.: _____

रूपक' अलंकार है।

पदव्याख्या -

प्रस्तावना = प्र + स्तु + णिच् + युच् + टाप्। कपटनाटकस्य = कपटम् एव नाटकं कपटनाटकम् (क०ध्या०) तस्य। कामकरिणः = काम एव करी कामकरी तस्य (क०ध्या०)। वध्यशाला = हननस्य शाला वध्यशाला (षष्ठी तत्पु०)। हन् + यत् (हनो यत् वधश्च)। साधुभावस्य = साधोः भावः साधुभावः (षष्ठी तत्पु०) तस्य। राहुनिद्रा = राहोः निद्रा (षष्ठी तत्पु०)। धर्मेन्दुमण्डलस्य = इन्दोः मण्डलम् इन्दुमण्डलम् (षष्ठी तत्पु०)। धर्म एव इन्दुमण्डलं (क०ध्या०) तस्य ॥ इति ॥


IND CamScanner App